नशीली दवाओ के खिलाफ देहरादून के युवा ,

इस पेडलिंग के कारण दुष्परिणाम, इसे रोकने में चुनौतियां एवं समाधान

आज हमारे सामने एक सबसे बड़ी सामाजिक समस्या पैदा हो रही है, युवाओं के नशे का शिकार होना. जो कल के होने वाले देश के जांबाज कर्णधार हैं आज वही सबसे ज्यादा नशे के शिकार हैं जिनको देश की उन्नति में अपनी ऊर्जा लगानी थी वो आज अपनी अनमोल शारीरिक और मानसिक ऊर्जा चोरी, लूट - पाट और मर्डर जैसी सामाजिक कुरीतिओं में नष्ट कर रहे हैं, आज का ७० % युवा नशे का शिकार है, जिस तरह से टेक्नोलाजी विकसित हुई है, ठीक उसी तरह से नशे के सेवन में भी नई टेक्नोलाजी विकसित हुई है, आज का युवा शराब और हेरोइन जैसे मादक पदार्थों का नशा नहीं बल्कि कुछ दवाओं का इस्तेमाल नशे के रूप में कर रहा है, इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि इस तरह की दवाएं आसानी से युवाओं की पहुँच में हैं और इनके सेवन से घर या समाज में किसी को एहसास भी नहीं होता कि इस व्यक्ति ने किसी मादक पदार्थ का सेवन किया है, आज की चकाचौंध भरी जिंग में हम इतने स्वार्थी हो गए हैं कि हमें यहाँ तक ख्याल नहीं रहता कि हमारा बच्चा किस रास्ते पर जा रहा है, क्या कर रहा है कोई परवाह नहीं, बस बच्चे कि ख्वाहिशें पूरी करते जा रहे हैं,

आज हमे पैसे कि लालच ने इतना अंधा कर दिया है कि हम सामाजिक बुराइयों को जन्म देने में जरा भी नहीं हिचकते, जिस व्यवसाय को लोग समाज में सबसे पूज्यनीय

मानते थे वही आज इस बुराई को जन्म दे रहे हैं, जिन दवाओं को बिना डॉक्टर के पर्चे के नहीं मिलना चाहिए, आज वही दवाएं धड़ल्ले से बिना पर्चे के और कई गुना रेट पर मिल रही हैं, यहाँ तक कि ये दवाएं बनिए कि दुकानों पर भी मिल जाती हैं, जिससे युवा आसानी से उसका सेवन करते हैं, समाज के इस सबसे बड़ी बुराई को दूर करने के लिए सबसे पहले हमें जागरूक होना होगा फिर प्रशासन को, हमें लालच जैसी लाइलाज बीमारी को अपने अन्दर से निकाल फेकना होगा, नहीं तो यह कुरीति धीरे-धीरे एक दिन हमें हमारे पुरे समाज को फिर हमारे इस पुरे सुन्दर देहरादून को फिर पुरे भारत को खा जायेगा फिर हमारा दुनिया में भी कोई अस्तित्व नहीं रह जायेगा,

कारण

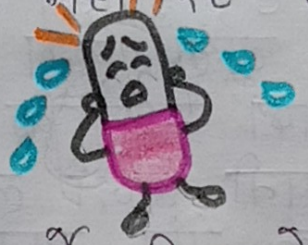

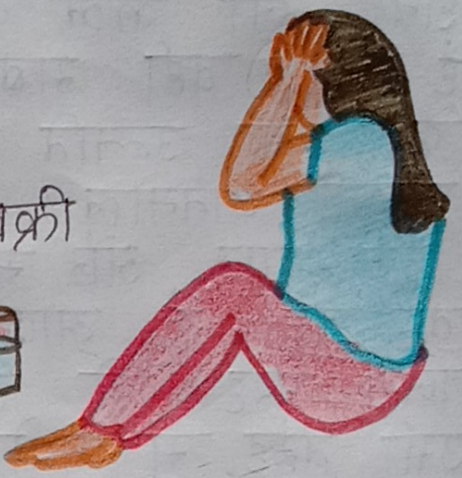

- शिक्षा की कमी
- नशा संबधी पदार्थों की खुलेआम बिक्री
- संगति का असर
- माडर्न बनने के लिए
- पाश्चात्य संस्कृति
- सिनेमा का प्रभाव
- तनाव परेशानी
- नशीली दवाओं की अवैध तस्करी - पड़ोसी राज्यों से लेकर दूर-दराज के इलाकों से नशीली वस्तुओं और दवाओं की तस्करी करने वाले माफियाओं की इस व्यापार में अच्छी खासी कमाई हो रही हैं, ऐसे में बिक रही नशीली दवाओं सहित अन्य नशीली वस्तुओं का क्षेत्र के युवा भारी मात्रा में सेवन कर रहे हैं, ऐसा नहीं हैं कि रोकथाम के लिए बने विभागों को जानकारी न हो लेकिन कारवाई के नाम पर केवल खानापूर्ति की जा रही हैं,

दर्द और एलर्जी से राहत दिलाने के लिए बनाई गई दवाइयों का उपयोग युवा वर्ग नशे के लिए करने लगा हैं, पेंटाविन इंजेक्शन, कोरेक्स सीरप और स्पाजमो प्राक्सीवन कैप्सूल का नशा के लिए उपयोग किया जा रहा हैं, नशे के ये सामान मेडिकल स्टोर में 2 रूपए से लेकर 15 रूपए में आसानी से

मिल जाते हैं, स्पाजमो प्रावसीवान कैप्सूल पेट दर्द से राहत की दवा है, इसकी कीमत 40 से 50 रूपए का 8 पीस का पत्ता आता है जिसको मार्केट के मेडिकल स्टोर में 100 से 120 तक में बेचाजारहा है, युवा एक साथ चार से पांच कैप्सूल खाकर इसका उपयोग नशे के लिए कर रहे हैं,

लक्षण

- मूड / स्वभाव में अचानक बदलाव आना,
- भूख न लगना,
- उनींदेपन या अनिन्द्रा के दौरे आना,
- शरीर में दर्द रहना और उबकाई आना,
- शौचालय में घंटो बिताना,
- झूठ बोलना,
- नौकरी या खेलकूद मनोरंजन गतिविधियों में रुचि न होना, पैसे की बढ़ती मांग / चोरी करना

दुष्परिणाम

- संक्रामक बीमारियां और स्वास्थ्य खराब होना,
- एच. आई. वी / एड्स,
- स्कूल / कॉलेज में अनुपस्थित रहना,
- नौकरी / आमदनी की क्षति,
- निराशा या खराब सेहत के कारण मौत हो सकती है,
- नशीले पदार्थों का व्यसनी, चोरी, बलात्कार, हत्या जैसे अपराध कर सकता है,
- गरीबी बढ़ती है,
- घरेलु हिंसा को बुलावा,
- भविष्य नष्ट होता है,

चुनौतियां

विश्व में भारत सबसे युवा आबादी वाला देश है, इसकी 65% जनसंख्या 35 वर्ष से कम उम्र की है और वहीं भारत ही दुनिया में नशाखोरी के मामले में दूसरे स्थान पर है, नशे का कारोबार से सरकार बहुत मुनाफा कमाती है

लेकिन इसके साथ-साथ ये हमारे युवाओं की जिंदगी के साथ खिलवाड़ करता है, भारत में डॉक्टर द्वारा लिखी गई दवाओं का दुरुपयोग एक बड़ी समस्या है, जो कम होने की जगह बढ़ती जा रही है। साथ ही हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि बिना डॉक्टर की पर्ची के केवल मानसिक बीमारियों वाली दवाएं ही नहीं इस्तेमाल की जा रही हैं, इसके अलावा लोग नशे के लिए एंटीबायटिक्स, स्टेरॉयड का इस्तेमाल बिना किसी डॉक्टर की सलाह के कर रहे हैं। इसकी वजह से उन्हें स्वास्थ्य समस्याएं भी हो रही हैं।

शहर में चल रहे नशे के कारोबार का नेटवर्क उन झुग्गी-झोपड़ियों से चलता है, जहां आम लोग कदम तक नहीं रखना चाहते, यहां सजने वाली मंडी के बारे में पुलिस सबकुछ जानती है मगर अनजान बनी रहती है, यदा-कदा कार्रवाई होती भी है तो महज दिखावे के लिए। जेब में पैसे होने चाहिए और थोड़ी जान-पहचान, फिर अफीम, चरस, स्मैक और गांजा का कश आसानी से लगाया जा सकता है, हाल के वर्षों में सुल्फा का कारोबार इतनी तेजी से बढ़ा है कि अब इसका सिंडिकेट बन गया है, सिंडिकेट में शामिल चेहरों की पहुंच पुलिस से लेकर उन सभी जगहों तक हो गई, जहां से वह अपना कारोबार फैलाते ही जा रहे हैं। यकीन न हो तो दून मेडिकल कॉलेज के बाहर घूमने वाले बाबाओं और भिखारियों की पोटलियां टटोल कर देखिए, जो यहां सुबह से शाम तक नशे के आदी लोगों से पैसे लेकर पुड़िया घुमाते थमाते रहते हैं।

दरअसल चरस, हेरोइन, गांजा पर पुलिस की पैनी नजर होती है, इसकी बिक्री माफिया के लिए खतरे से खाली नहीं होती है, लिहाजा अब वे सुल्फे के कारोबार में हाथ आजमाने लगे हैं, इसकी बिक्री शहर के अनेक स्थानों पर बने चाय-पान के खोखों से होती है। ऐसा नहीं यहां हर किसी को सुल्फा मिल जाता है, इसके लिए विशेष पहचान बतानी होती है या किसी पुराने ग्राहक के साथ जाना होता है।

पैसों के लिए उतारते हैं सुलफा

सड़क किनारे व खेतों में उगने वाले भांग के पौधे से सुलफा उतारा जाता है। इस काम के लिए माफिया झुग्गी - झोपड़ियों या फिर ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले बेरोजगार युवकों को टारगेट करते हैं। पैसों के लिए बेरोजगार युवक पूरे दिन भांग के खेतों में घूमते हैं और उसे माफिया तक पहुंचाते हैं। साथ ही खुद भी सेवन करते हैं। सुल्फा सस्ता नशा है, लेकिन उतना खतरनाक भी जानकारों की मानें तो इसके अत्यधिक सेवन से व्यक्ति अंधा भी हो सकता है।

स्पेशल सिगरेट है कोडवर्ड

नशा मांगना है, तो वह सीधे नहीं मिलेगा। इसके लिए कोडवर्ड है। चरस वाली सिगरेट यदि चाहिए, तो आपको बोलना होगा, स्पेशल सिगरेट। एक दो बार खोखा संचालक पूछेगा भी ये कौन सी सिगरेट है। फिर उसे वास्तव में लगेगा कि सामने वाला ग्राहक है, तो स्पेशल सिगरेट आपको 150 रुपये में मिल जाएगी। इसके अलावा स्मैक, चरस और अफीम के भी कोड बने हुए हैं।

यहां से गुजरती हैं नशे की गलियां

नशा वैसे तो शहर में कहीं भी मिल सकता है, लेकिन बिंदाल बस्ती, मद्रासी कालोनी, भगत सिंह कॉलोनी, वीर गब्बर सिंह बस्ती, ब्रह्मावाला, ब्रह्मपुरी, दीपनगर, शास्त्रीनगर खाला, रेस्ट कैंप समेत दो दर्जन से अधिक ऐसे स्थान हैं, जहां नशे का बाकायदा कारोबार होता है।

समाधान

अभिभावकों को क्या करना चाहिए

- अपने बच्चों पर ध्यान दें, उनके साथ समय बिताएं,
- बच्चे और उसके साथियों की गतिविधियों में दिलचस्पी लें,
- उनसे बातचीत करें और उन पर विश्वास रखें,
अपने बच्चे की व्याकुलताओं का मूल कारण ढूंढे,
बच्चों को हौसला दें कि वे अपनी नशे की आदत को स्वीकार करें,

विद्यार्थियों को क्या करना चाहिए

- सदैव साथियों के दबाव का विरोध करें, हमेशा ही "नशीले पदार्थों को ना" कहें।
- ड्रग्स 'कूल' या 'सही' नहीं होते हैं, स्वयं निर्णय करें।
- छात्रायें पेय पदार्थ लेते समय रोहीपनोल जैसे "डेट-रेप ड्रग्स" के प्रति सावधान रहें।
- नशीले पदार्थों के दुरूपयोग या अवैध व्यापार के बारे में अपने स्कूल / कॉलेज व पुलिस को रिपोर्ट करें।

शिक्षकों को क्या करना चाहिए

- स्कूल / कॉलेज के आसपास विक्रेताओं तथा फेरीवालों की समय - समय पर जांच करें,
- छात्रों के प्रदर्शन में अचानक गिरावट आने पर शक के दायरे में लाना चाहिए,
- होस्टल के कमरों की समय - समय पर अचानक जांच करें,
- नशीले पदार्थों के बारे में सूचना का प्रयास करें,
- प्रत्येक वर्ष 26 जून को "नशीले पदार्थों के दुरूपयोग और अवैध व्यापार के विरुद्ध अन्तराष्ट्रीय दिवस" के रूप में मनाए जाने जैसे कार्यक्रम समय समय पर आयोजित करते रहें ताकि नशीले पदार्थों के विरुद्ध अभियान सक्रिय रखा जा सके।

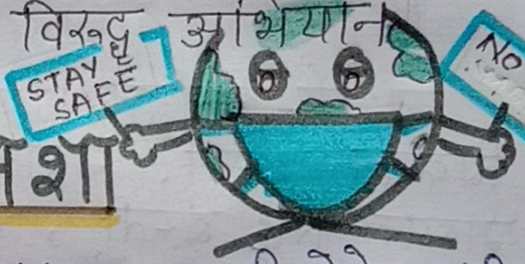

कोविड - 19 और बढ़ता नशा

विश्वव्यापी महामारी कोविड - 19 के कारण बढ़ती बेरोज़गारी और घटते अवसरों का सबसे ज़्यादा असर निर्धनतम समुदायों पर हो रहा है जो उन्हें धन कमाने के लिए नशीली दवाओं की तस्करी, खेती और मादक पदार्थों (ड्रग्स) के इस्तेमाल की ओर धकेल सकता है, मादक पदार्थों और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र के कार्यालय (UNODC) ने एक रिपोर्ट जारी की है जो दर्शाती है कि दुनिया में साढ़े तीन करोड़ से ज़्यादा लोग अब नशे की लत का शिकार हैं, मादक पदार्थों तथा विश्व में ड्रग्स की समस्या का ख़ामियाज़ा निर्बलों, और हाशिए पर रहने वाले समूहों, युवाओं, महिलाओं और निर्धनों को चुकाना पड़ता है।"

"कोविड-19 संकट और आर्थिक मन्दी से ड्रग्स के खतरे और ज्यादा गहरे हो जाएंगे और यह सब ऐसे समय में हो रहा है जब पहले ही हमारी स्वास्थ्य और सामाजिक प्रणालियां बिल्कुल किनारे पर हैं, और हमारे समाजों को यह सब सहने में मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है।"

मादक पदार्थों की तस्करी, उनके इस्तेमाल की लत और उनसे पैदा होने वाली बीमारियों से निपटने के लिए सरकारों को ज्यादा एकजुटता और समर्थन दर्शाना होगा ताकि टिकाऊ विकास लक्ष्य हासिल किये जा सकें, कोविड-19 के कारण तस्करों को नए रास्ते और तरीके ढूंढने पड़ सकते हैं।

महामारी के कारण दर्दनिवारक दवाओं की भी किल्लत पैदा हुई है जिसके कारण लोग एल्कोहॉल (मदिरा) और अन्य सिन्थैटिक ड्रग्स या फिर इन्जेक्शन से ड्रग्स लेने का सहारा ले सकते हैं।

कानून

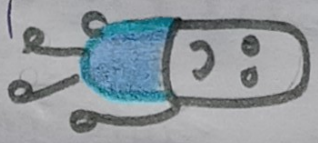

- स्वापक औषधियां या मन: प्रभाती पदार्थ निजी प्रयोग के लिए, यहां तक कि थोड़ी मात्रा में भी, रखा जाना एक अपराध है।
- अनुमति के बिना स्वापक फसलों (अफीम, भांग आदि) की खेती एक अपराध है।
- गैर कानूनी औषधियों को रखने, बेचने या उपभोग करने के लिए अपने अहाते का उपयोग कर देना एक अपराध है।
- स्वापक औषधियों का अवैध उत्पादन, बेचना, खरीदना और परिवहन एक अपराध है।
- हेरोइन, चरस और कोकेन आदि जैसे ड्रगों को वाणिज्यिक मात्रा में बेचना गैर-जमानती अपराध है, जिसके लिए न्यूनतम 10 वर्ष व अधिकतम 20 वर्ष तक की जेल और 2 लाख रु० तक का जुर्माना हो सकता है।
- ऐसे अपराध बार-बार करने वाले को मृत्युदंड तक दिया जा सकता है।
- नशीले पदार्थों के अवैध व्यापार के बारे में सूचना पुलिस विभाग को दें, मुखबिर की पहचान गुप्त रखी जाएगी।

निष्कर्ष

किसी भी तरह के नशे से मुक्ति के लिए सिर्फ एक ही उपाय है वह संयम है वैसे तो संयम कई समस्याओं का समाधान है लेकिन जहां तक नशामुक्ति का सवाल है संयम से बेहतर और कोई दूसरा विकल्प नहीं है। प्रधानमंत्री ने कहा कि ड्रग्स थ्री डी बुराइयों को लाने वाला है और ये बुराइयां जीवन में डार्कनेस (अंधेरा), डिस्ट्रक्शन (बर्बादी) तथा डिवास्टेशन (तबाही) है। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है जिनके जीवन में कोई ध्येय नहीं है, लक्ष्य नहीं है, जीवन में एक खालीपन है, वहां ड्रग्स का प्रवेश सरल होता है, ड्रग्स से अगर बचना है और अपने बच्चे को बचाना है, तो उसे ध्येयवादी बनाइए, जीवन में कुछ अलग करने के इरादे वाला बनाइए, बड़े सपने देखने वाला बनाएं।

LETS DEVELOP
OUR LIVES
OUR COMMUNITIES
OUR IDENTITIES
WITHOUT DRUGS

D.O.B- 23-02-199
NAME - SHAREEN PARVEEN
FATHER'S NAME - SHAMIM AHMAD
MOTHER'S NAME - SHABANA PARVEEN
MOBILE NO - 8279379046
EMAIL - Shumairakhan33@gmail.com
ADDRESS - 35/7 Lakhi Bagh D.Dun.